स्फिरिक Bergkrystall v. l. in Cabban. nach CKDn.

स्फारि ३. विश्वः

स्पाटिक (von स्पिटिक) 1) adj. (f. आ und ई) krystallen MBs. 1,2346. 2366. 2,75. 1664. 1667. 3,11698. 13,5316. Hariv. 12098 (f. आ). R. 3,61,6. 4,50,29. 5,9,17. 6,106,24. Suça. 2,324,17. Spr. (II) 2132. Katelàs. 21,10. 50,188. 86,119. ेलिङ्ग Verz. d. Oxf. H. 85,a,45. fg. अत्माला Райкав. 3,15,58. Çatr. 8,34. — 2) f. ई (v. l. स्पाटको) Alaun Ràéan. 13,121. — 3) n. a) = स्पाटिक Bergkrystall Çabdar.im ÇKDa. MBs. 2,1982 (?). 3,14221. R. 5,10,10. 13,11. 16,25. — b) eine Sandelart Âçv. Grej. Paric. 2,3.

स्पारिकापल m. = स्पारिक Bergkrystall Trik. 2,9,28.

स्पारीक n. dass. Cabdan. im CKDn.

स्फाणि ८ विश्वः

स्पाति (von स्पाय) f. = वृद्धि AK. 3,3,9. H. 1502. Fettmachung, Mastung; Aufzucht: des Viehs RV. 1,188,9. TS. 1,1,4,2. AV. 2,25,3. 3,24,3. 9,6,33. 19,31,1. 8. 9. धान्यस्य 2,26,3. ्कर्णा Kaug. 21. सर्व-स्पातियुती गिरि: das Gedeihen Carr. 1,31. — Vgl. गय.

स्फातिनर्पा n. N. eines Saman (Gedeihen bewirkend) Ind. St. 3,246,a. स्फातिमेन् (von स्फाति) adj. gedeihlich, feist AV. 3,24,6.

स्पान (von स्पाय्) s. गय .

स्पाप्, स्कायते (वृद्धा) Dairup. 14,16. स्रस्पापिष्ट und स्रस्पाष्ट Vop. 8, 46. 115. partic. स्पात und स्पीत (s. bes.) 26,115. feist werden, zunehmen überh.: पस्पापे (P. 6,1,22, Schol.) शास्त्रताघवम् Вялग्र. 14,109.

- caus. स्पावपति P. 7,3,41. Yop. 18,11. mästen; verstärken, vermehren überh.: स्वं प्रभावम् Вватт. 12,76. शक्ती: 17,43. श्रिपस्पावहन्धू-नां विकासम् 4,33. 15,99. Ygl. स्पाविषत्र.
- म्रा wachsen, zunehmen: म्रास्पापतास्य (म्रस्पा ?) वीर् वम् BBATT.
- सम्, partic. संस्कान TS. Paar. 11,16. feist werdend, sich mästend AV. 6,79,1; vgl. TS. 3,3,8,2. Vgl. संस्काय.

स्पार् (von स्पार् ) Unions. 2, 13. 1) adj. (f. आ) ausgedehnt, weit, gross H. 1430. an. 2, 467. Med. r. 97. Viçva bei Uééval. zu Unidis. 2, 13. स्थली Verz. d. Oxf. H. 355, a, 3. प्याप्य: Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6,504, Çl. 13. स्पार्स्पार्यपाझिललांकाती: Sân. D. 42, 16. 'जुल voll aufgeblüht Milatim. 81, 14. 'ज्यात्मा Spr. (II) 7254. रूस Kathâs. 103, 208. पुष्प Verz. d. Oxf. H. 130, a, 15. नीकार dicht Riéa-Tar. 3, 168. heftig, stark: आर्च Z. d. d. m. G. 27, 57. उत्कापुटा 45. संस्कार Катhâs. 7, 19. — 2) m. = स्पार्या Vop. 26, 174. Prail, Patsch (vgl. स्पाल्): सा (जउधीर्मृत्यः) ऽज्ञानविष तस्याङ्गे ज्ञानामीत्यभिमानतः । स्पार् द्दी मीर्च्याक्लात्प्रभास्त्वसम्पारयत् ॥ Катhâs. 62, 170. — 3) eine Blase im Golde oder in einem Schilde u. s. w.; m. H. an. Med. n. Viçva a. a. O. — Als n. ohne Angabe der Bed. auch Sidde K. 249, 6, 1.

स्फार्पा n. = स्फर्पा, स्फुर्पा Ramán. zu AK. 3,3,10 nach ÇKDa. — Vgl. समत्तस्फार्पाम्खदर्शन.

स्कारीभू (स्कार + 1.भू), भवति sich ausbreiten, — vermehren Мяйы. 49,6. सीर्भम् Spr. (II) 6644. स्रापदः 2780. 7347.

स्पाणि (feblerbaft) s. विश्वः

स्पाल m. = स्पालन Vop. 26,174.

स्पालन (vom caus. von स्पाल्) n. das Aufschlagen: कृस्त o das Schlagen auf Etwas mit der Hand Kull. zu M. 8,25.

स्पाविषत्र (vom caus. von स्पाप्) nom. ag. Mäster: गवाम् Air. Ba. 1.13.

स्पिकस्राव (स्पित् + स्राव) m. eine best. Krankheit Vanan. Ban. S. 69,23.

स्पिगी f. = स्पिज़ RV. 3,32,11. 8,4,8. ÇAT. BR. 12,7,1,7.

स्पिरधातक (स्पित् + घा°) m. ein best. Baum, = करल Çabban. im CKDa.

स्पिच् अ स्पिज्

स्पिज् हुबग्रव कार्पादि zu P. 4,2,80. v. l. im हुबग्रव वेतनादि zu 4,12. f. Sidde. K. 248,a,8. Hinterbacken, Hüfte H. 609. Halâi, 2,358. Çâñke. Gņej. 3,11. Jåéň. 3,97. Varáh. Bņe. S. 70,20. चारू वर्गा. क्रेंग्रंट से स्वत्रकात अ. स्पिच् AK. 2, 6,3,26 (nach dem Schol. zu Kàrj. Ça. 6,7,6 स्पिजी). स्पिचं वास्पावकर्तपर् M. 8,281. MBB. 2,712. 3,10475. कार्पात स्पिची 8,1853. Suça. 1,321,6 (Hdschr. स्पिज्). Mârk. P. 11,8. unbestimmt ob स्पिच् oder स्पिज् MBB. 1,5929. 7,7897. Hariv. 2231. 12364. R. 5,5,26. Suça. 1,49,2. 66,15. 86,12. 269,12. 2,92,11. Mâlatim. 78,16. Varáh. Bņe. S. 51,8. 43. 52,8. 53,53. 61,10. 68,17. — Vgl. वृद्धु , स्पेजापनि, स्पेजिक.

स्पिञ्ज in नर्म° Daçan. 2,44. 47 wobl nur feblerhaft für °स्पूर्ज; vgl. स्कञ्ज.

स्फिट्, स्फेटपति (ह्रोक्ने, वृत्याम्) Dairup. 32, 36, v. l. (श्वनाद्रे) 37, v. l. (क्तियाम्) 90, v. l. — Vgl. संस्फेट.

स्पि र, स्पिर्यति (दिंसायाम्) Дийтир. 32,90.

स्पित् (von स्पाय) Uṇādis. 1,54. adj. P. 6,4,157. Vop. 7,56. feist: उ-दूर हुए. 8,1,23. reichlich, viel AK. 3,2,13. H. 1426. — Vgl. श्रति , स्पे-मन्, स्पेयंस्, स्पेष्ठ.

FUIT (partic. von FUIU) P. 6,1,22. Vop. 26,115. adj. in gedeihlichem Zustande befindlich, wohlhabend, reich, blühend: Gegend, Land, Reich, Haus MBn. 1,2357. 3,16223. 4,159. 13,3148. HARIV. 1089. 8916. R. 1, 1,5. 26,17. 2,49,12. 52,58. 82,4. 3,61,7. 27. 4,43,5. 5,16,7. VARAH. BRH. S. 5,46. KATHAS. 18,58. 54,98. BHAG. P. 1,6,11. काल Jach. 1,54. R. 4,28, 18. Bålc. P. 3,4,29. कएरिकड्मा: Spr. (II) 1736. शास्त्राणि P. 1, 3,38, Schol. dem es wohlergeht Kam. Nitis. 10,27. 18,18. VARAH. BRH. S. 5,46. 69,32. KATHAS. 27,12. Spr. (II) 2936. APPIUT voll, regenschwanger Makke. 85, 4. UFI dicht Malatin. 75, 21. reichlich, im Ueberfluss vorhanden: AR R. Gorn. 2,1,14. 5,75,15. 6,98,41. Raga-Tar. 1, 239. शीलनिधि МВв. 3,2992. स्पीतमध्यपरिपेलवं फलम् Улкан. Ввн. S. 94, 8. Kateas. 18,277. Raga-Tar. 1,201. श्रालीक Sarvadarçanas. 63,8. चयन (wir lesen स्प्रीतं st. स्प्रीतः) Райкав. 1,3,60. परिवर्क Daças. 61,2. उत्सवाः MBs. 2,810. गणाः 7,1489. R. 4,27,13. Spr. (II) 7324. यशस МВц. 1,3757. 3,10278. Вийс. Р. 3,22,18. 4,21,7. 平洋 南中 Spr. (II) 6495. reichlich gesegnet mit, voll von (instr. oder im comp. vorangehend): म्रागमेबद्धिभ: MBH. 13,6288. रह्म PRAB. 85,13. द्राता RAGA-TAB. 4, 192. मध् • Катийя. 71, 197. ब्रल्सधर्मचरूषा • 78,7. रस • Уит. іл LA. (III) 1,9.

स्पतिता (von स्पति) f. ein gedeihlicher Zustand, das Wohlergehen Kim. Nitis. 8,11. P. 1,3,38, Schol.